प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण

का

द्विवर्षीय पाठ्यक्रम आधारित नोट्स

Year : 2nd

Paper : VII

Subject : SANSKRIT

Compiled & Edited by **Mrs. Teresa Panna**

PRIMARY TEACHERS EDUCATION COLLEGE

Gurwa, P. O.- Sitagarha, Dist. – Hazaribag -825 303, Jharkhand, INDIA

(A Jesuit Christian Minority Institution)

Recognized by ERC, NCTE vide order No. BR-E/E- 2/96/2799(12) dt 11.02.1997

Phone No. 06546-222455, Email: ptecgurwa1997@rediffmail.com Website: www.ptecgurwa.org

अनुक्रमणिका

द्वितीय वर्ष

संस्कृत शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि

इकाई 5 – रचना

- अनुच्छेद लेखन, कथा लेखन, पद्य लेखन ।
- रिक्त स्थान पूर्ति, शब्द एवं वाक्य मिलान, वाक्य रचना ।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

इकाई – 5
(रचना)

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

रचना शिक्षण

रचना का हमारे जीवन में, विशेष महत्व है। संसार में महान व्यक्तियों ने अपने जीवन में जो सफलताएँ प्राप्त की हैं, उनका प्रमुख कारण उनकी लेखन शक्ति है।

अर्थ :– इसकी उत्पति रच् धातु से हुई है। रचना का अर्थ निर्माण करना, सृजन करना, संवारना, क्रमबद्ध करना, बनाना, उत्पति, आविष्कार, गढ़ना, तैयार करना आदि है।

रचना वह कलात्मक अभिव्यक्ति है जिसके द्वारा हम निश्चित उद्देश्य को सामने रखकर अपने विचारों को लिपिबद्ध करते हैं।''

''रचना में मानव अपने भावों को क्रमबद्ध ढंग से एक सूत्र मे पिरोकर भली–भाँति दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

रचना दो प्रकार की होती है।

क. लिखित रचना।

ख. मौखिक रचना।

हमारे सामाजिक जीवन में दोनों का बड़ा महत्व है। इसमें वही व्यक्ति अधिक सम्मानित होते हैं जो अच्छे वक्ता अथवा लेखक होते है। किन्तु वक्ता का सम्मान उसके जीवन काल में ही होता है। वक्ता के विचार स्रोताओं के हृदय को कुछ समय तक अवश्य झंकृत कर देते हैं। किंतु समय के अंतराल के साथ उसकी छवि धूमिल हो जाती है। उसकी मृत्यु के पश्चात् लोग उसे एकदम–सा भूल जाते है। लेकिन लेखक के विचार सर्वदा पाठक के हदय को झंकृत करते रहते हैं। लेखक मर कर भी अमर है। और वह सदैव जीवित रहता है तथा लोगों को प्रेरणा प्रदान करता रहता है।

कविकुल गुरू–कालिदास, वाणभट्ट, भवभूति आदि अपनी रचनाओं के कारण ही तो आज भी अमर है।

प्राथमिक स्तर पर रचना शिक्षण के उद्देश्य

क. चित्रों पर प्रश्न करना : शिक्षक किसी पुष्प, पशु, वस्तु आदि के चित्र दिखाकर उसपर सरल प्रश्न करता है और छात्र सरल वाक्यों में प्रश्नों का उत्तर देते हैं। जैसेः–

Q. इदम् किम् अस्ति ?

Ans इदम् पुष्पम् अस्ति।

ख. रिक्त स्थानों की पूर्ति करना : छात्रों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करवाई जाती है। वाक्य में एक–दो शब्दों का स्थान छोड़ दिया जाता है और छात्र उसने उपयुक्त शब्द लिखता है। जैसे :–

चन्द्रशेखरस्य पितुः नाम श्री सीताराम तिवारी आसीत्।

ग. उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करना :– वाक्य में दिए गए रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए एक उपयुक्त शब्द तथा अन्य शब्द भी दिए रहते है, तथा छात्र उपयुक्त शब्द को चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करता है। जैसे :

राम फलम् खादति। (खादः, खादसि, खादति)।

घ. दिए गए शब्दों एवं उक्तियों से वाक्य रचना करनाः– जब किसी गद्यांश या पद्यांश को पढ़ाते समय कोई शब्द आता है तो शिक्षक छात्रों को उस शब्द से वाक्य निर्माण करवा सकता है। जैसेः–

कृषकः – कृषकः बीजम् वपति।

ड. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखना :– शिक्षक छात्रों के समक्ष प्रश्नों को लिख देगा तथा छात्र उसका उत्तर देंगे। जैसे :–

Q. मनुष्याणां बन्धुः कः अस्ति?

Ans मनुष्याणां बन्धुः उद्यमः अस्ति।

PTEC GURWA, SITAGARHI, BIHAR

च. **उत्तरों के प्रश्न लिखनाः** छात्रों में अधिक रचनात्मक विकास हेतु शिक्षक उत्तरों को देकर छात्रों से उनका प्रश्न निर्माण करवाएँगे। जैसे :–

Q. मनुष्याणां बन्धुः उद्यमः अस्ति।

Ans मनुष्याणां बन्धुः कः अस्ति?

माध्यमिक स्तर पर रचना शिक्षण के (1–6 तक प्राथमिक स्तर की तरह) उद्देश्य

छ. विभक्ति एवं प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाना :–

ज. उपसर्गों के प्रयोग द्वारा नए शब्दों का प्रयोग सीखना।

झ. वार्तालाप का अभ्यास करना। जैसे मित्र – मित्र में संस्कृत में वार्ता।

ञ. पत्र लेखन (अनौपचारिक पत्र)

ट. अनुच्छेद लेखन।

ठ. संक्षेपण।

उच्च स्तर पर रचना शिक्षण के उद्देश्य

(ऊपर के सभी बिन्दुएँ शामिल)

क. **पत्र लेखन :** निजी और व्यवहारिक पत्र जैसे आवेदन पत्र, संवेदना, स्मृति, बधाई पत्र, निमत्रंण पत्र, आदि।

ख. **डायरी लिखना :** इस सरल संस्कृत भाषा में डायरी लिखने का अभ्यास कराया जाता है।

ग. **मौलिक रचना :** किसी भी विषय पर छोटे–छोटे वाक्य में मौलिक रचनाओं का अभ्यास करवाया जाता है।

घ. **प्रश्नोत्तर करना :** शिक्षक किसी भी विषय पर छात्रों से सरल प्रश्न करेंगे तथा छात्र उनका उत्तर देते हैं।

ड. **कथा–कथन :** चित्र के माध्यम से शिक्षक प्रत्येक भाग से संबंधित प्रश्न पूछते हैं। कहानी से संबंधित प्रश्नों के उत्तरों के द्वारा छात्रों से कहानी पूर्ण करवायी जाती है।

च. **अभिनय :** संस्कृत शिक्षण में अभिनय भी छात्रों को मदद करता है। इसमें सर्वप्रथम नाटकों की विषय का चयन करते हैं उसके बाद शिक्षक कुछ योग्य छात्रों का चयन करते हैं जो शुद्ध रूप से संस्कृत बोल सकें तथा उचित रूप से अभिनय कर सकें। तत्पश्चात् प्रत्येक छात्र को उसका भाग कंठस्थ करने के लिए दिया जाता है। वैसे इसके बाद छात्र उस नाटक को प्रस्तुत करते हैं।

PTEC GURWA SITAGARHA, HAZARIBAG